

## अक्षय नवमी व्रत कथा

एक बार की बात है धन की देवी माता लक्ष्मी धरती पर आईं। तब उन्होंने देखा कि धरती पर सभी लोग भगवान शिव और श्री हरि विष्णु की पूजा कर रहे हैं। यह देखकर उनके मन में दोनों देवताओं की पूजा करने का विचार आया, फिर उन्होंने सोचा कि कैसे दोनों देवताओं की एक साथ पूजा की जाए। वह इसी विचार में लीन थीं।

कुछ समय बाद उन्हें ध्यान आया कि धरती पर दोनों की एक साथ पूजा केवल आंवले के पेड़ के सामने ही की जा सकती है क्योंकि केवल आंवले में ही बेल और तुलसी दोनों के गुण होते हैं। इसके बाद उन्होंने भक्ति भाव से उनकी पूजा की। देवी लक्ष्मी की भक्ति देखकर श्री हरि और शिव प्रकट हुए और आंवले के पेड़ के पास भोजन बनाकर दोनों देवताओं को खिला दिया। तब से हर साल कार्तिक मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को अक्षय नवमी मनाई जाती है।